पाठ्यक्रम

223 भारतीय संस्कृति और विरासत

1.0 औचित्य

एक राष्ट्र प्रगतिशील एवं विकसित तभी माना जाता है जब वहाँ के लोग उसके नागरिक होने पर गर्व करते हैं। प्राचीन राष्ट्रों में केवल भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जिसने अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये कठोर संघर्ष किया। अपनी संस्कृति को बचाये रखा तथा उसे संवाहित भी किया है। हमारी संस्कृति जीवन्त बनी रही क्योंकि इसमें कुछ शाश्वत मूल्यों का पोषण और विकास होता रहा जो चिरकाल से भारत में बने हुये हैं। इसकी संस्कृति जीवन्त है, उसकी जड़े जीवन्त अतीत में निहित है और यह एक जीवन्त आध्यात्मिक भूमि पर स्थापित है। इसने अनेक उतार–चढ़ाव के बाद भी चेतना की लौ को जलाये रखा है। इस संस्कृति ने विश्व में विद्यमान वैचारिक एवं भौतिक भिन्नता के उपरान्त भी आध्यात्मिक एकता के सिद्धान्त को स्थापित किया। अपनी सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन व्यक्ति को जीवन में बुद्धिमत्ता और सौन्दर्य के अवलोकन की अंतद ष्टि प्रदान करता है। अतः अपनी जन्मभूमि की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान देश के प्रत्येक नागरिक के लिये अपरिहार्य है। कोई भी शिक्षा व्यवस्था तब ही सफल होने का दावा कर सकती है जब उसका आधार देश की सांस्कृतिक प ष्ठभूमि हो और वह उस देश की जनता की आकांक्षाओं को पूर्ण करने योग्य हो।

2.0 उद्देश्य

इस विषय के मुख्य उद्देश्य–

- विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति लगाव और प्रेम की भावना को विकसित करना।
- देश की सम द्ध एवं गौरवशाली संस्कृति का ज्ञान प्रदान करना।
- विद्यार्थियों को अपने पूर्वजों के दर्शन, विज्ञान, कला, संगीत, वास्तु के क्षेत्रों में महान योगदान से परिचित कराना।
- विभिन्न भारतीय धर्मों तथा अन्य विभिन्नताओं में व्याप्त मूलभूत एकता से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
- विश्व के विभिन्न देशों से भारतीय संस्कृति के प्रभाव का परिचय देना।

3.0 अंक वितरण

माड्यूल	शीर्षक	अंक
1.	संस्कृति–अवधारणा एवं अवयव	10
2.	भारतीय संस्कृति–कालचक्र	14
3.	भाषा और साहित्य	10
4.	भारतीय दार्शनिक चिन्तन धारा	10
5.	ललित कलाएँ	10
6.	विज्ञान एवं तकनीक	12
7.	शिक्षा	10
8.	सामाजिक संरचना	12
9.	विदेशों में भारतीय संस्कृति	12
	योग	**100**

पाठ्यक्रम विवरण

माड्यूल 1 : संस्कृति : परिभाषा और विशिष्टताएँ

अंक : 10

अध्ययन घंटे : 20

लक्ष्य

इस माड्यूल में संस्कृति की अवधारणा एवं अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। भारतीय संस्कृति के विशिष्ट लक्षणों, जिनसे यह संस्कृति विलक्षण बनी, उनकी भी चर्चा की गई है।

इकाई 1 : संस्कृति : अर्थ और अवयव

- संस्कृति की परिभाषा
- भारत में संस्कृति की अवधारणा
- संस्कृति की विशिष्टताएँ–संस्कृति सार्वभौमिक है, संस्कृति की प्रकृति गतिशील है, संस्कृति अर्जित की जाती है और सीखी जाती है, संस्कृति में भौतिक तत्व शामिल होते है।
- संस्कृति का उद्भव–संस्कृति का विकास, अर्थात् जंगली, असभ्य, ग्रामीण संस्कृति, कृषि, औद्योगीकरण।
- सभ्यता का अर्थ–सभ्यता में विभिन्नता, संस्कृति और सभ्यता, संस्कृति और विरासत।

इकाई 2 : भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ

- संस्कृति की भारतीय अवधारणा
- भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ–आध्यात्मिकता,धर्म, सर्वव्यापकता, अनेकता में एकता, वैज्ञानिक द ष्टिकोण, कर्म का सिद्धान्त, प्रकृति प्रेम, स्त्रियों का सम्मान, मूल्य आधारित समाज।
- संस्कृतियों के सम्मिलन की ओर

माड्यूल 2 : भारतीय संस्कृतिः कालचक्र

अंक : 14

अध्ययन घंटे : 35

लक्ष्य

इस माड्यूल का लक्ष्य भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक विकास की विवेचना करना है। विभिन्न कालों में हुये भारतीय संस्कृति के विकास पर प्रकाश डालने के साथ–साथ यह माड्यूल पाठकों को धार्मिक प्रभाव और सुधारात्मक आन्दोलनों की भी जानकारी देगा।

इकाई 3 : विभिन्न कालों के दौरान भारतीय संस्कृति-प्राचीन भारत–I

- भारतीय संस्कृति की जीवन रेखा
- समय मापक्रम
- मानव का विकास
- भारतीय संस्कृति की जीवन्तता
- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : सिंधु–सरस्वती सभ्यता और वैदिक संस्कृति में भारतीय संस्कृति की जड़े।

इकाई 4 : प्राचीन भारत–II

- लोकप्रिय धार्मिक सुधार
- दक्षिण भारत में वैदिक पुररूत्थान
- साम्राज्यों का युग
- राजपूत
- पल्लव और चोल

इकाई 5 : मध्यकालीन भारत–I

- मुसलमानों का आगमन
- सूफी मत का उदय
- राजनीतिक पहलू
- भारतीय सांस्कृतिक विकास
- धर्म और समाज पर प्रभाव

इकाई 6 : मध्यकालीदन भारत–II

- लोककलाओं का विकास–चित्रकला, संगीत
- भारतीय मुगल संस्कृति
- आधुनिक भाषाओं का उदय
- नये पंथ–सिख, पारसी
- दक्षिण भारत–दक्षिण भारत का योगदान

इकाई 7 : आधुनिक भारत

- पश्चिम का उदय और भारत पर उसका प्रभाव
- 18वीं शताब्दी के अंत में भारत
- सामाजिक परिस्थितियाँ
- सामाजिक और धार्मिक सुधारक–राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद, ज्योतिबा गोविंदराव फूले, नारायण गुरू, पंडित रमा बाई।
- प्रेस और आधुनिक भारतीय भाषाओं तथा साहित्य का विकास
- निष्कर्ष

माड्यूल 3 : भाषा एवं साहित्य

अंक : 10

अध्ययन घंटे : 25

लक्ष्य

यह माड्यूल भारतीय भाषाओं एवं साहित्य का परिचय देताा है। वेद हमारे सर्वाधिक प्राचीन साहित्य हैं जो मानव जीवन के विविध आयामों से सम्बद्ध हैं। उपनिषद् वेदों और पुराणों में से संग्रहीत दार्शनिक

ज्ञान का प्रस्तुतिकरण है। भारत का अधिकतर प्राचीन साहित्य संस्कृत में है। भारत में बोली जाने वाली सभी भाषाओं की इसमें चर्चा की जायेगी।

इकाई 8 : भारतीय भाषाएँ और साहित्य-I

- भारतीय भाषाएँ
- वेद–ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद, अथर्व वेद
- उपनिषद
- धार्मिक ग्रंथ : रामायण महाभारत–भगवद गीता
- पुराण
- पाली, प्राकृत और संस्कृत में बौद्ध और जैन साहित्य
- संस्कृत साहित्य

इकाई 9 : भारतीय भाषा और साहित्य-II

उत्तर भारतीय भाषाएं और साहित्य–उर्दू और फारसी, हिन्दी साहित्य, बंगाली, असमी और उड़िया साहित्य, पंजाबी और राजस्थानी, गुजराती भाषा, सिंधी, मराठी, कश्मीरी साहित्य।

माड्यूल 4 : भारतीय दार्शनिक चिन्तन धारा

अंक : 10

अध्ययन घंटे : 25

लक्ष्य

यह माड्यूल भारतीय दार्शनिक चिन्तनों से सम्बद्ध है। इससे विद्यार्थी को भारतीय चिन्तन एवं प्रचलन में निरंतरता और परिवर्तन को समझने में मदद मिलेगी।

इकाई 10 : दर्शन की अवधारणा और अर्थ

- तत्वशास्त्र (सत्य का सिद्धान्त)–विश्व विद्या, मानव की प्रकृति, स्वतंत्रता की समस्या, ईश्वर की अवधारणा
- ज्ञानशास्त्र–अज्ञेयवाद, संशयवाद, ज्ञान की प्रामाणिकता, प्रयोगवाद
- तर्कशास्त्र
- नीतिशास्त्र
- सौंदर्यशास्त्र

इकाई 11 : दर्शन की विभिन्न धारायें–I

- भारतीय दर्शन, सांख्य दर्शन, मुख्य विशेषताएँ, प्रकृति : मूल कारण, पुरूष की प्रकृति
- योग दर्शन–मुख्य विशेषताएँ, अष्टांग योग
- न्याय दर्शन–मुख्य विशेषताएँ
- वैशेषिक दर्शन–मुख्य विशेषताएँ
- मीमांसा दर्शन–मुख्य विशेषताएँ, ज्ञान की प्रामाणिकता, मीमांसा तत्वाज्ञान, मीमांसा का धर्मदर्शन
- वेदान्त दर्शन–मुख्य विशेषताएँ, अद्वैत तत्वज्ञान, माया का सिद्धान्त

इकाई 12 : दर्शन की विभिन्न धारायें–II

- चर्वाक स्कूल–मुख्य विशेषताएँ ज्ञान शास्त्र, विश्वविद्या, चर्वाक नीतिशास्त्र
- जैन दर्शन–मुख्य विशेषताएँ
- बुद्ध का दर्शन–मुख्य विशेषताएँ

इकाई 13 : भारतीय चिन्तन में एकता और निरन्तरता

- अनेकता में एकता–प्रमुख सामान्य विशेषताएँ

माड्यूल 5 : ललित कला

अंक : 10

अध्ययन घंटे : 25

लक्ष्य

प्राचीन भारतीय समाज में कला एवं धर्म का चोली दामन का साथ रहा है। हमारे मंदिर सभी कलाओं का खजाना है। भारतीय कला द ष्टिकोण में आध्यात्मिक भावाभिव्यक्ति में आदर्शवादी और प्रस्तुतीकरण में सौन्दर्यपरक है। इस माड्यूल में पाठक भारतीय कला में निहित आध्यात्मिक उद्देश्यों के विषय में जानेंगे। साथ ही मुगल और रोमन कला शैली के प्रभावों के साथ लोक कला औरर शिल्प (ग्रामीण एवं आदिवासीय) उल्लेख भी किया गया है।

इकाई 14 : भारतीय कला : द श्य कला–चित्रकला एवं मूर्ति कला

- कला का उद्भव
- चित्रकला

- मूर्तिकला
- कला का विकास–मौर्यकाल, अजंता, मुगलकाल, ब्रिटिश कम्पनी स्कूल, आधुनिक भारतीय कला, लोककला, मिथिला चित्रकारी, कलमकारी चित्रकला, वरली चित्रकला, कालीघाट चित्रकला, पहाड़ी चित्रकला
- भारतीय संस्कृति में कला की भूमिका

इकाई 15 : भारतीय कलायें–संगीत, न त्य एवं नाट्य

- कलाओं की अवधारणा
- संगीत, न त्य और धर्म का संक्षिपत इतिहास
- कला के तीनों रूपों का वर्तमान परिद श्य
- प्रख्यात संगीतकार जिन्होंने संगीत के क्षेत्र में योगदान दिया
- मानव व्यक्तित्व का विकास और कला की विधायें।

इकाई 16 : भारतीय वास्तु शिल्प

- भारतीय संस्कृति की जीवन–रेखा
- भारतीय परिप्रेक्ष्य
- भारतीय वास्तुशिल्प का आज तक का विकास–पूर्व ऐतिहासिक सिंघु घाटी काल, ऋग्वेद काल में विकास, पूर्व ऐतिहासिक युग, मुगलकालीन वास्तुशिल्प,
- उपनिवेशी वास्तुशिल्प और आधुनिक काल
- भारतीय वास्तुशिल्प की महानता
- भारतीय वास्तुशिल्प की सीमायें

माड्यूल 6 : विज्ञान एवं तकनीक

अंक : 12

अध्ययन घंटे : 30

लक्ष्य

यह माड्यूल प्राचीन भारतीय विज्ञान एवं वैज्ञानिकों के योगदान पर प्रकाश डालता है। यह भारतीयों के विज्ञान के क्षेत्र में योगदान को प्रस्तुत करेगा जो किसी भी रूप में उनके आध्यात्मिक योगदान से कम महत्वपूर्ण नही है। विद्यार्थी अपने उन पूर्वजों को जानेंगे जिन्होंने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में महान योगदान दिया है। महान वैज्ञानिक का उल्लेख उचित स्थान पर किया जायेगा।

इकाई 17 : विज्ञान और तकनीक

- वेद ज्ञान के सर्वोपरि स्रोत
- धातु विज्ञान की उपलब्धि–महरौली में लौह स्तंभ, बुद्ध की तांबे की मूर्ति
- Aeronautical and Marine Times
- गणित
- नक्षत्र विज्ञान
- ज्योतिष विज्ञान
- भौतिक शास्त्र
- रसायन विज्ञान
- प्राकृतिक विज्ञान और आयुर्वेद
- परम्परा में निहित पर्यावरण सन्तुलन

इकाई 18 : प्राचीन भारत का विज्ञान और वैज्ञानिक–I

- गणित–भारत की अंक व्यवस्था, बौद्धायन, आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य
- भौतिक शास्त्र–कणाद, वराहमिहिर
- रसायन शास्त्र–नागार्जुन
- खगोल विज्ञान

इकाई 19 : प्राचीन भारत के विज्ञान और वैज्ञानिक–II

- जीव विज्ञान
- शल्य चिकित्सा
- सुश्रुत
- ज्योतिष फलित
- आर्युवेद (भारतीय चिकित्सा पद्धति)–आयुर्वेद की प्रमुख विशेषतायें–चरक
- योग–पतंजलि

इकाई 20 : मध्यकालीन भारत का विज्ञान और वैज्ञानिक

- मध्यकाल में विज्ञान–अंकगणित, जीवविज्ञान, रसायनशास्त्र, खगोल विज्ञान, औषधि विज्ञान, कृषि

इकाई 21 : आधुनिक भारत के वैज्ञानिक

- श्रीनिवास रामानुजम
- चन्द्रशेखर वी. रमन
- जगदीश चन्द्र बोस
- होमी जहांगीर भाभा
- डॉ. विक्रम साराभाई
- डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

माड्यूल 7 : शिक्षा

अंक : 10

अध्ययन घंटे : 30

लक्ष्य

भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा न केवल आजीविका प्राप्ति का साधन थी अपितु समग्र व्यक्तित्व का विकास भी करती थी। तक्षशिला और नालन्दा आदि प्राचीन विश्वविद्यालयों को विश्व में अभूतपूर्व ख्याति प्राप्त हुई। इसका भी उल्लेख इस माड्यूल में होगा। इस माड्यूल में पाठकों को प्राचीन शिक्षा व्यवस्था और आज की शिक्षा व्यवस्था के विकास और समस्याओं से परिचित होगा।

इकाई 22 : प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था

- शिक्षा की केन्द्रीय अवधारणा
- शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य
- ऋण की अवधारणा
- सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण
- गुरूकुल व्यवस्था
- गुरू शिष्य सम्बन्ध (गुरू शिष्य परंपरा)

- शिक्षा का विषय
- भिक्षा और गुरूदक्षिणा की अवधारणा
- लड़कियों की शिक्षा

इकाई 23 : प्राचीन भारत में प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र

- तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, विक्रमशिला, काशी, नदिया, मिथिला
- वैदिक विद्यालयों में अध्ययन की पद्धति

इकाई 24 : समकालीन शिक्षा प्रणाली : संक्षिप्त ऐतिहासिक परिद श्य और इसकी समस्याएं

- प्राचीन शिक्षा प्रद्धति की महत्वपूर्ण विशेषताएं
- बौद्ध धर्म के अंतर्गत शिक्षा प्रणाली–विषय, शिक्षा पद्धति का प्रकार
- मुगलकाल में शिक्षा–मुस्लिम शिक्षा की प्रमुख विशेषताएं
- ब्रिटिश शासन के अंतर्गत शिक्षा–ईसाई धर्म प्रचारकों की प्रधानता, अंग्रजी शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा विभागों की स्थापना, उच्चतर शिक्षा
- श्री अरविंद की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली
- स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्कूली शिक्षा
- समकालीन शिक्षा की समस्यायें
- शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उल्लेखनीय घटनाएं
- शिक्षा के विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर के संगठन
- शिक्षा के विविध क्षेत्र

माड्यूल 8 : सामाजिक संरचना

अंक : 12

अध्ययन घंटे : 30

लक्ष्य

किसी भी समाज की संस्कृति में सामाजिक जीवन के सभी पक्ष समाहित होते हैं। भारतीय संस्कृति को समग्र रूप से जानने के लिये तत्कालीन सामाजिक संरचना के विषय में जानना आवश्यक है। इस पाठ में पाठकों को प्राचीन भारतीय सामाजिक संरचना से अवगत कराने का प्रयास किया गया है। जो कि व्यक्ति से प्रारभ्भ होकर समष्टि तथा स ष्टि तक जाती है।

इकाई 25 : भारतीय सामाजिक संरचना वर्ण एवं जाति व्यवस्था

- भारतीय समाज की संरचना
- वर्ण व्यवस्था–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
- जाति व्यवस्था का उदय

इकाई 26 : भारतीय समाज के जीवन मूल्य 'पुरूषार्थ' एवं 'आश्रम' व्यवस्था

- 'पुरूषार्थ' की अवधारणा–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
- पुरूषार्थ की सामाजिक महत्ता
- ऋण की अवधारणा
- सामाजिक संस्था 'आश्रम'–ब्रह्मचर्य आश्रम, ग हस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम
- आश्रम व्यवस्था की सामाजिक महत्ता
- संस्कार

इकाई 27 : भारतीय समाज में परिवार की अवधारणा और नारी का स्थान

- परिवार की अवधारणा– परिवार की विशिष्टताएँ, परिवार के प्रकार्य
- भारतीय परिप्रेक्ष्य में परिवार–विवाह का महत्त्व
- भारत में परिवार व्यवस्था–संयुक्त परिवार की विशिष्टतायें
- भारतीय समाज की स्त्री का स्थान एवं भूमिका

इकाई 28 : कुछ समकालीन सामाजिक समस्याएँ

- दहेज समस्या
- नशाखोरी और नशे की लत
- बाल शोषण–लड़की और स्त्रियों की समस्या
- ब द्धों की समस्या
- गरीबी और बेरोजगारी की समस्या
- भारतीय समाज में नारी का स्तर और भूमिका

माड्यूल 9 : विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार

अंक : 12

अध्ययन घंटे : 30

लक्ष्य

दूसरे देशों ने युद्धों के माध्यम से अन्य देशों को जीता जबकि भारतीय दूर देशों में रह रहे व्यक्तियों के हृदयों के मार्ग से उन देशों में पहुंचे। प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति ने अन्य देशों के विद्यार्थियों और महत्वाकांक्षियों को आकर्षित किया जो अपने साथ अपनी आत्मा में रच बस गई भारतीय संस्कृति को भी ले गये। यह माड्यूल पाठकों को भौगोलिक सीमाओं से परे व्यापार, शिक्षा या श्रम के द्वारा भारतीय संस्कृति के प्रसार से अवगत करायेगा।

इकाई 29 : विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रसार के माध्यम

- व्यापारियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रसार
- आचार्यों, राजदूतों और धर्मप्रचारकों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रसार
- बन्धुआ मजदूर तथा अन्य माध्यमों से बन्धुआ मजदूर रोमा
- अप्रवासी भारतीयों काा योगदान

इकाई 30 : मध्य तथा पूर्व एशिया के देशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार

- अफगानिस्तान
- मध्य एशिया
- चीन
- कोरिया
- जापान
- नेपाल
- मंगोलिया, साईबीरिया, बुर्यातिया
- तिब्बत
- भूटान

इकाई 31 : दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति

- श्री लंका
- बर्मा
- थाईलैंड
- लाओस
- कम्बोडिया
- वियतनाम (चम्पा)
- मलेशिया
- इण्डोनेशिया

इकाई 32 : भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार-पश्चिम एशिया

- व्यापार में जहाजरानी की भागेदारी
- भारत में अफ्रीका से संबंध
- भारत के रोम से संबंध
- आरंभिक भारतीय प्रसार
- सम्राट अशोक का बाहरी विश्व का योगदान
- विद्वानों के द्वारा प्रसार
- चिकित्सा ज्ञान का विदेशों में प्रचार
- बन्धुआ मजदूरों द्वारा प्रसार